ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 6, June 2019

‘दिनकर’ के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

S. Shafi Haider Amil

Associate Professor, Department of Hindi, Shia PG College, Lucknow, India

सार

हिंदी साहित्य में दिनकर की पहचान राष्ट्रकवि के रूप में है। उनका साहित्य राष्ट्रीय जागरण व संघर्ष के आह्वान का जीता-जागता दस्तावेज़ है। दिनकर जी के यहाँ राष्ट्रीय चेतना कई स्तरों पर व्यक्त हुई है।हुंकार, रेणुका, इतिहास के आँसू जैसी कविताओं में दिनकर जी ने विद्रोह और विप्लव के स्वर को उभारा है। इनमें कर्म, उत्साह, पौरुष एवं उत्तेजना का संचार है। यह सब तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति के लिये अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ।दिनकर जी के यहाँ राष्ट्रीय चेतना एक अन्य स्तर पर वहाँ दिखाई देती है, जहाँ वे शोषण का प्रतिकार करने का समर्थन करते हैं। वे कहते हैं कि यदि कोई हमारे साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करे तो नैतिकता का तकाजा युद्ध करना ही है न कि अनैतिकता को स्वीकार करना-"छीनता हो स्वत्व कोई और तू

त्याग तप से काम ले, यह पाप है"

संघर्ष के आह्वान के साथ दिनकर जी ने प्राचीन भारतीय आदर्शों एवं मूल्यों की स्थापना के माध्यम से भी राष्ट्रीय जागरण व राष्ट्रीय गौरव की भावनाओं को जगाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।दिनकर जी की राष्ट्रीय चेतना संकीर्ण नहीं है। यह न केवल ब्रिटिश राज्य का विरोध करने वाली है अपितु स्वतंत्रता के बाद भी जनता के सामाजिक-आर्थिक शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाली है। कवि ने ‘दिल्ली’, ‘नीम के पत्ते’, ‘परशुराम की प्रतिज्ञा’ में स्वतंत्रता-उपरांत जनजीवन में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विषमताओं का चित्रण किया है-

"सकल देश में हालाहल है, दिल्ली में हाला है। दिल्ली में रोशनी, शेष भारत में अंधियारा है।" इस प्रकार यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि दिनकर जी के यहाँ राष्ट्रीय चेतना उसी स्तर पर व्यक्त हुई है जो उन्हें भारतेन्दु, गुप्त जी की परंपरा में स्थान दिलवाती है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' ' (23 सितम्बर 1908- 24 अप्रैल 1974) हिन्दी के एक प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार थे।[1][2] वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं।

'दिनकर' स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गये। वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे। एक ओर उनकी कविताओ में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष हमें उनकी कुरुक्षेत्र और उर्वशी नामक कृतियों में मिलता है।

मुख्य शब्द: दिनकर, राष्ट्रीय जागरण, राष्ट्रीय गौरव, भारत, कविताओं, महत्त्वपूर्ण योगदान, राष्ट्रीय आंदोलन, चेतना

परिचय

आधुनिक युग में हिन्दी काव्य में पौरुष का प्रतीक और राष्ट्र की आत्मा का गौरव गायक जिस कवि को माना गया है, उसी का नाम रामधारी सिंह ‘दिनकर’ है। वाणी में ओज, लेखनी में तेज और भाषा में अबाध प्रवाह उनके साहित्य में देखा जा सकता है।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 6, June 2019

'दिनकर' का जन्म बिहार के सिमिरिया घाट स्थान पर 30 सितम्बर, 1908 को हुआ। मुंगेर जिले में यह छोटा-सा ग्राम है। इनके पिता का नाम श्री रविसिंह था। कविवर दिनकर ने काव्य-क्षेत्र में 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' जैसी महान् कृतियाँ देने के अतिरिक्त 'रेणुका', 'रसवन्ती', 'सामधेनी', 'बापू', 'रश्मि-रथी', 'द्वन्द्वगीत', 'नील कुसुम', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'आत्मा की आँखें' आदि अनेक कृतियाँ प्रदान की हैं। सन् 1959 में 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित हुए। इन्हें 'संस्कृति के चार अध्याय' ग्रन्थ पर साहित्य अकादमी से पाँच हजार का पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1972 में 'उर्वशी' कृति पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। देव दुर्विपाक से 24 अप्रैल सन् 1974 को आपका असामयिक निधन हो गया। संस्कृत के अनुसार 'राष्ट्र' में 'ध' प्रत्यय के योग से 'राष्ट्रीय' शब्द बनता है। 'राष्ट्र' शब्द से 'राष्ट्रीय' और 'राष्ट्रीय' से 'राष्ट्रीयता' शब्द की संरचना हुई है। राष्ट्र विशेष के गुणों या राष्ट्र के प्रति विशिष्ट प्रेम को राष्ट्रीयता की संज्ञा दी जा सकती है। इस प्रकार राष्ट्रीयता राष्ट्र विशेष की आत्म-चेतना है। राष्ट्रीयता के अन्तर्गत राष्ट्र या देश के प्रति व्यक्ति का संवेदनशील घनिष्ठ संबंध होता है। राष्ट्रीयता मनुष्य की सहज और स्वाभाविक वृत्तियों में से एक है, जिसके आधार पर वह अपने देश के प्रति आत्मीय लगाव का अनुभव करता है। वह अपने देश को समुन्नत, विकसित और गतिशील बनाने के लिए सदैव उत्सुक रहता है। इसी भावावेश में वह राष्ट्र की रक्षा, कल्याण और विकास के लिए सर्वस्व न्योछावर करते हुए अपना गौरव समझता है। यह निर्विवाद सत्य है कि जब व्यक्ति 'स्व' की परिधि से बाहर आकर सामाजिक संदर्भ में धार्मिक जातीय और धार्मिक संस्पर्श करता हुआ राष्ट्रीयता के विशाल परिवेश में पहुँचता है, तो उसमें दिव्य और आदर्श भाव विकसित हो जाते हैं। राष्ट्र-प्रेम मानव में राष्ट्र के समाज, प्रकृति, उसकी संस्कृति, उन्नति और विकास के प्रति भावात्मक लगाव उत्पन्न करता है। [1] राष्ट्र-प्रेम मानव-मन में उत्साह, त्याग और उत्सर्ग का अपूर्व भाव भरता है। सच्चा राष्ट्र-प्रेम आत्मा के दिव्य भाव का साक्षात्कार करता है, जिससे देश के समस्त मानव, पशु-पक्षी और प्रकृति से आत्मीय लगाव का अनुभव करते हैं। राष्ट्र-प्रेम की मनमोहक छाया में पहुँचकर मानव के मन का भावात्मक विकास भूत, वर्तमान से लेकर भविष्यत तक हो जाता है। राष्ट्र-प्रेम में स्वदेश के प्रति आदर और सम्मान का भाव होता है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए बाबू गुलाबराय ने कहा है- किसी विशिष्ट भौगोलिक इकाई के जनसमुदाय के पारस्परिक सहयोग और उन्नति की अभिलाषा से प्रेरित, उस भू-भाग के लिए प्रेम और गर्व की भावना को 'राष्ट्रीयता' कहते हैं। वस्तुत: राष्ट्रीयता एक अनूठी भाव-धारा है, जिसमें राष्ट्र के सूक्ष्म और स्थूल दो तथ्यों के प्रति उत्तरोत्तर लगाव दिखाई देता है। राष्ट्रीयता के स्थूल तथ्यों में भौगोलिक और प्राकृतिक संदर्भ आते हैं,

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 6, June 2019

तो सूक्ष्म तथ्यों में सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, कलात्मक, भाषायी चेतना आती है।

राष्ट्रीयता के संदर्भ में राष्ट्र की भौगोलिक सीमा के प्रति निष्ठा होना प्राथमिक आधार है। भौगोलिक सीमा राष्ट्र की भूमि और उसकी पहचान निर्धारित करती है। भूमि विषयक देश-प्रेम मनुष्य में राष्ट्रीयता की पावन चेतना का आधार सिद्ध होता है। भू-भाग के आधार पर ही समस्त जन-समूह के प्रति सहज स्नेहिल भाव उभरता है। यदि भूमि की विभिन्न वस्तुओं के प्रति लगाव बढ़ता है तो प्रकृति से उदात्त तत्त्वों का विकास होता है। संस्कृति की भाव-तरंगिणी राष्ट्र की अनुप्रेरक आत्मशक्ति है। वस्तुत: संस्कृति राष्ट्र को महिमा मंडित करने वाली आत्मशक्ति है। मनुष्य का संस्कारित आदर्श विचार उसे मानवतावादी धरातल पर पहुँचा देता है और फिर अनुकरणीय राष्ट्रीयता का विकास होता है। संस्कृति के अन्तर्गत आदर्श, परम्पराएँ, रीति-रिवाज, साहित्य, संगीत और कला की बलवती भूमिका होती है। राष्ट्रीयता के लिए सांस्कृतिक एकता-अनिवार्य तत्त्व है और इसके विद्यमान रहने पर ही राष्ट्र में एकता की भावना जागृत होती है। राष्ट्रीय चेतना में धार्मिकता की बलवती भूमिका होती है। राष्ट्रीयता में व्यक्ति राष्ट्र की गौरव-गरिमा की रक्षा के लिए समर्पित होने के लिए तत्पर रहता है। राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में ऐतिहासिक संदर्भों की महती भूमिका होती है। देश के निर्माण में ऋषि, मुनियों, महात्माओं, मनीषियों के चिंतन और गतिशीलता का विशेष योगदान होता है। अतीत की गौरव-गाथा से जन-मन को सन्मार्ग पर गतिशील रहने की प्रेरणा मिलती है। निश्चय ही, राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्र की स्वतंत्रता, अखंडता और एकता की पावन-त्रिवेणी का प्रवाह होता है।[2]

'चेतना' शब्द अंग्रेजी शब्द कानशियसनेस का हिन्दी पर्यायवाची है। डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी ने चेतना को विवेकपूर्ण वैचारिकी माना है।

विचार-विमर्श

दिनकर जी का अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। चीन से युद्ध के दिनों में 'दिनकर' की 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता अत्यन्त प्रसिद्ध हुई। इस कविता में देश के सैनिकों को अहिंसा त्यागकर पौरुष बनने का आह्वान किया गया है। सन् 1962 के चीनी-भारतीय-युद्ध के समय कविवर 'दिनकर' ने 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता में देश के पौरुष को जागृत करते हुए सिंह गर्जना की थी-

वैराग्य छोड़ बाहों की विभा संभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चन्द्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियो रे,
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे।
(परशुराम की प्रतीक्षा)

'दिनकर' अपनी काव्य-चेतना के बारे में लिखते हैं-

क्रांति-धात्रि कविते! उठ अंबर में आग लगा दे।
पतन, पाप, पाखंड जले, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।

'दिनकर' प्रेम, राष्ट्रीयता, मानवता और क्रांति के गायक हैं। उनकी कविता में राष्ट्र-व्यापी जागरण का स्वर है। एक ओर वे अपने अतीत से प्रभावित हैं तो दूसरी ओर वर्तमान की अधोगति से क्षुब्ध। प्राचीन गौरव के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा है। दिनकर की कविता में दीन, दु:खी और

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 6, June 2019

दलितों के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना भी है। उन्होंने श्रमिकों और कृषकों के दयनीय जीवन का मार्मिक अंकन किया है। निम्न पंक्तियों में उनकी सहानुभूति एवं संवेदना द्रष्टव्य है -

आहें उठो दीन कृषकों की।
मजदूरों की तड़प पुकारें।
अरी गरीबी के लोहू पर ,
खड़ी हुई तेरी दीवारें .... ।

कवि ने हिमालय का मानवीकरण किया है। वास्तव में , कवि हिमालय के माध्यम से भारतीयों को संबोधित करते हुए कहते हैं -

ओ , मौन तपस्वी - लीन यती।
पत भर को तो कर दृगोन्मेष।
रे ज्वालाओं से दग्ध , विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश
सुख - सिन्धु , पंचनद , ब्रह्मपुत्र ,
गंगा , यमुना की अमिट - धार ,
जिस पुण्यभूमि की ओर बही ,
तेरी विगलित करुणा उदार।
(**हिमालय**)

कविवर दिनकर कहते हैं - हे हिमालय , देश के कितने वीर पुरुष रूपी रत्न हमसे छिन गए , जो स्वतंत्रता की चिनगारी जलाए रहे। भारत का अनंत वैभव चला गया। हिमालय समाधिस्थ होकर साधना ही करता रहा और प्यारा देश भारत इन वीर रत्नों से रहित हो गया। महाभारत काल में दुःशासन ने केवल एक द्रौपदी के बाल खींच लिये थे , जिसके कारण महाभारत के भयंकर युद्ध की योजना बनाई गई और आज न जाने कितनी स्त्रियों के सतीत्व को लूटा जा रहा है और कितनी कन्याओं का अपहरण हो रहा है , किन्तु फिर भी किसी के मन में पीड़ा नहीं कि इन अत्याचारों का प्रतिरोध किया जाए। चित्तौड़ से पूछो कि जरा - सा अत्याचार होने पर या किसी नारी की ओर किसी की कुदृष्टि होने पर बड़े - बड़े संग्राम रचे गए और नारियाँ जौहर व्रत करके जीते - जी अपने प्राणों की बलि दे दिया करती थीं। कवि ने इसी पीड़ा को निम्न शब्दों में प्रकट किया है -

कितनी मणियाँ लुट गई ? मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष।
तू ध्यान - मग्न ही रहा , इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।
कितनी द्रौपदियों के बल खुले ?
किन - किन कलियों का अंत हुआ ?
कह हृदय खोल चित्तौड़ ! यहाँ
कितने दिन ज्वाल - बसंत हुआ ?
(**हिमालय**)

हिमालय का गौरव - गान करके देशोद्धार की प्रेरणा देते हुए कवि भारत के अतीत वैभव और वीर भाव को जगाना चाहता है। कवि हिमालय को संबोधित करके कहता है कि हे हिमालय ! आज इस समय हमें अर्जुन और भीम तथा उनके क्रमशः गांडीव धनुष और गदा की आवश्यकता है। उन्हें

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 6, June 2019

लौटा दे। आज युद्ध में पूर्ण पराक्रम दिखाकर शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले योद्धाओं की आवश्यकता है। कवि शंकर के आवास-स्थल हिमालय से प्रार्थना करता है कि तू शिवजी से प्रार्थना कर कि वे पुनः एक बार तांडव नृत्य करें जिससे सारे भारत में 'हर-हर', 'बम-बम' की ध्वनि गूँज उठे जिसकी अंगड़ाई लेकर सारी भूमि काँप उठे अर्थात् सर्वत्र भयंकर हलचल मच जाए। [3] यथा -

रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनकी स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गांडीव-गदा,
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।
कह दे शंकर से, आज करें,
के प्रलय-नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
हर-हर, बम-बम का फिर महोच्चार।
(हिमालय)

कवि देश के लोगों को जागृत करते हुए कहता है कि लक्ष्य पास आ जाने पर थक कर बैठ जाना उचित नहीं है -

दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य-प्रकाश तुम्हारा।
लिखा जा चुका अनल-अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलायेगी ही,
अम्बर पर धन बन छाएगा ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूरर नहीं है,
थककर बैठ गये क्यों भाई! मंजिल दूर नहीं है।
(आशा का दीपक)

उक्त कविता का आशय यह है कि- जिस भारत भूमि की स्वतंत्रता के लिए इतने बलिदान हुए, उसमें स्वतंत्रता का फूल खिलकर ही रहेगा। यह आशा अवश्य फलवती होगी। हमारी पीड़ा जन्य साँसें आकाश में बादल बनकर अवश्य छायेगी जिससे स्वतंत्रता के रूप में सुखों की वर्षा होगी। हे भाई, अब लक्ष्य निकट ही है, अत: थक कर मत बैठो। तुम साधना-श्रम करो जिससे तुम शीघ्र लक्ष्य की प्राप्ति कर सको।

'आग की भीख' कविता में देश की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए भगवान से स्वदेश के हित वरदान की भीख माँगता है कि उसके देश की सारी बुराइयाँ दूर हो जायें -

मन की बंधी उमंगें असहाय जल रही हैं,
अरमान-आरजू की लाशें निकल रही हैं।
भीगी-खुली पलों में रातें पुकारते हैं।
सोती वसुंधरा जब, तुझको पुकारते हैं।
इनके लिए कहीं से निर्भीक तेज ला दे,
पिघले हुए अनल कर इनको अमृत पिला दे।
उन्माद, बेकली का उत्थान माँगता हूँ,
विस्फोट माँगता हूँ, तूफान माँगता हूँ।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 6, June 2019

अर्थात् हे प्रभु ! देश के युवकों के हृदयों में हिलोरे ले रही उमंगें साधनों के अभाव में व्यर्थ जल रही हैं। उनके मन की इच्छाओं और तमन्नाओं का जनाजा निकल रहा है। आँखों से निकले आँसुओं के कारण भीगी और खुली आँखों के साथ पल - पल गिनकर रातें काट देते हैं। जब सारी धरती सुखपूर्वक सो रही होती हैं तो ये निराश युवक सहायता के लिए तुझे पुकारते हैं। हे प्रभु ! तू इन युवकों के हृदय में निर्भीक तेज का संचार कर दे।

कविवर दिनकर ने ओजस्वी शब्दों में राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में अतीत का गौरव - गान किया है। ‘ रेणुका ’ में संकलित ‘ हिमालय ’ कविता में वे कहते हैं -

तू पूछ अवध से , राम कहाँ ? वृंदा घनश्याम कहाँ ?
ओ मगध ! कहाँ मेरे अशोक ? वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ ?
री कपिलवस्तु ! कह बुद्ध देव के ये मंगल उपदेश कहाँ ?
तिब्बत , इरान , जापान , चीन तक गये हुए संदेश कहाँ ?

वस्तुत : कविवर ‘ दिनकर ’ संवेदनशील कवि हैं। उनका अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। उन्होंने सामाजिक उत्थान - पतन और आंदोलन से प्रभावित होकर काव्य - सृजन किया है। देश पर जब - जब संकट के बादल घिरते हैं , मानव - जीवन संघर्ष में जूझने लगता है , तब तब ‘ दिनकर ’ की कविता जन - मानस में ऊर्जा का संचार करती है। उनकी कविता देश की संस्कृति , सभ्यता , भाषा , परम्परा और आदर्श आदि की अनूठी एकता की आधारभूमि प्रस्तुत करती है।

परिणाम

'दिनकर' जी का जन्म 24 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास राजनीति विज्ञान में बीए किया। उन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी और उर्दू का गहन अध्ययन किया था। बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक विद्यालय में अध्यापक हो गये। १९३४ से १९४७ तक बिहार सरकार की सेवा में सब-रजिस्टार और प्रचार विभाग के उपनिदेशक पदों पर कार्य किया। १९५० से १९५२ तक लंगट सिंह कालेज मुजफ्फरपुर में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे, भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद पर 1963 से 1965 के बीच कार्य किया और उसके बाद भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार बने।

उन्हें पद्म विभूषण की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। उनकी पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय [3] के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उर्वशी के लिये भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। अपनी लेखनी के माध्यम से वह सदा अमर रहेंगे।[4]

द्वापर युग की ऐतिहासिक घटना महाभारत पर आधारित उनके प्रबन्ध काव्य कुरुक्षेत्र को विश्व के १०० सर्वश्रेष्ठ काव्यों में ७४वाँ स्थान दिया गया।

1947 में देश स्वाधीन हुआ और वह बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रध्यापक व विभागाध्यक्ष नियुक्त होकर मुज़फ़्फ़रपुर पहुँचे। 1952 में जब भारत की प्रथम संसद का निर्माण हुआ, तो उन्हें राज्यसभा का सदस्य चुना गया और वह दिल्ली आ गए। दिनकर 12 वर्ष तक संसद-सदस्य रहे, बाद में उन्हें सन 1964 से 1965 ई. तक भागलपुर विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया। लेकिन अगले ही वर्ष भारत सरकार ने उन्हें 1965 से 1971 ई. तक अपना हिन्दी सलाहकार नियुक्त किया और वह फिर दिल्ली लौट आए। फिर तो ज्वार उमरा और रेणुका, हुंकार, रसवंती और द्वंद्वगीत रचे गए। रेणुका और हुंकार की कुछ रचनाऐं यहाँ-वहाँ प्रकाश में आईं और अग्रेज़ प्रशासकों को समझते देर न लगी कि वे एक ग़लत आदमी को अपने तंत्र का अंग बना बैठे हैं और दिनकर की फ़ाइल तैयार होने लगी, बात-बात पर क़ैफ़ियत तलब होती और चेतावनियाँ मिला करतीं। चार वर्ष में बाईस बार उनका तबादला किया गया।

रामधारी सिंह दिनकर स्वभाव से सौम्य और मृदुभाषी थे, लेकिन जब बात देश के हित-अहित की आती थी तो वह बेबाक टिप्पणी करने से कतराते नहीं थे। रामधारी सिंह दिनकर ने ये तीन पंक्तियां पंडित जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ संसद में सुनाई थी, जिससे देश में भूचाल मच गया था। दिलचस्प बात यह है कि राज्यसभा सदस्य के तौर पर दिनकर का चुनाव पंडित नेहरु ने ही किया था, इसके बावजूद नेहरू की नीतियों की मुखालफत करने से वे नहीं चूके।

देखने में देवता सद्दश्य लगता है
बंद कमरे में बैठकर गलत हुक्म लिखता है।
जिस पापी को गुण नहीं गोत्र प्यारा हो
समझो उसी ने हमें मारा है॥

1962 में चीन से हार के बाद संसद में दिनकर ने इस कविता का पाठ किया जिससे तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू का सिर झुक गया था. यह घटना आज भी भारतीय राजनीती के इतिहास की चुनिंदा क्रांतिकारी घटनाओं में से एक है.

रे रोक युद्धिष्ठिर को न यहां जाने दे उनको स्वर्गधीर
फिरा दे हमें गांडीव गदा लौटा दे अर्जुन भीम वीर॥[5]

इसी प्रकार एक बार तो उन्होंने भरी राज्यसभा में नेहरू की ओर इशारा करते हुए कहा- "क्या आपने हिंदी को राष्ट्रभाषा इसलिए बनाया है, ताकि सोलह करोड़ हिंदीभाषियों को रोज अपशब्द सुनाए जा सकें?" यह सुनकर नेहरू सहित सभा में बैठे सभी लोगसन्न रह गए थे। किस्सा 20 जून 1962 का है। उस दिन दिनकर राज्यसभा में खड़े हुए और हिंदी के अपमान को लेकर बहुत सख्त स्वर में बोले। उन्होंने कहा-

देश में जब भी हिंदी को लेकर कोई बात होती है, तो देश के नेतागण ही नहीं बल्कि कथित बुद्धिजीवी भी हिंदी वालों को अपशब्द कहे बिना आगे नहीं बढ़ते। पता नहीं इस परिपाटी का आरम्भ किसने किया है, लेकिन मेरा ख्याल है कि इस परिपाटी को प्रेरणा प्रधानमंत्री से मिली है। पता नहीं, तेरह भाषाओं की क्या किस्मत है कि प्रधानमंत्री ने उनके बारे में कभी कुछ नहीं कहा, किन्तु हिंदी के बारे में उन्होंने आज तक कोई अच्छी बात नहीं कही। मैं और मेरा देश पूछना चाहते हैं कि क्या आपने हिंदी को राष्ट्रभाषा इसलिए बनाया था ताकि सोलह करोड़ हिंदीभाषियों को रोज अपशब्द सुनाएं? क्या आपको पता भी है कि इसका दुष्परिणाम कितना भयावह होगा?

यह सुनकर पूरी सभा सन्न रह गई। ठसाठस भरी सभा में भी गहरा सन्नाटा छा गया। यह मुर्दा-चुप्पी तोड़ते हुए दिनकर ने फिर कहा- 'मैं इस सभा और खासकर प्रधानमंत्री नेहरू से कहना चाहता हूं कि हिंदी की निंदा करना बंद किया जाए। हिंदी की निंदा से इस देश की आत्मा को गहरी चोट पहुँचती है।'

दिनकर जी ओज और पौरुष के कवि हैं। यहाँ 'ओज' शब्द का अर्थ उनकी क्रान्तिकारी राष्ट्रीय और वीरतायुक्त रचनाओं से है एवं 'पौरुष' का अर्थ कार्य से है। अतः पहले दिनकर जी की ओजस्वी वाणी जो राष्ट्रीयता से मुखरित हुई है, पर विचार आवश्यक है। दिनकर जी की राष्ट्रीयता पर उनके युग का प्रभाव पड़ा है। उनका युग दलित और शोषण युग था। छायावादी कवि उस परिस्थिति से कतरा कर निकल चुके थे, लेकिन दिनकर जी सीना तानकर आगे आये और तत्कालीन परिस्थितियों से लोहा लिया। उन्होंने बड़े साहस के साथ भारत माता की स्वतन्त्रता की बेड़ियों को काटने के लिए अपने ओजस्वी विचार की खड्ग धारण की।परिगणित वर्ग के नाम पर अंग्रेजों द्वारा किये गये साम्प्रदायिक अवार्ड से हिन्दू जाति की श्रृंखलाबद्धता को विश्रृंखलित होने का खतरा देख महात्मा गाँधी क्षुब्ध हो उठे और इसके विरोध में उन्होंने अनश किया और अछूतोद्धार का नारा देश को दिया। रूढ़िवादी तथा समाज में स्वयं को श्रेष्ठ समझाने वाला ब्राह्मण वर्ग तिलमिला उठा और उस तिलमिलाहट में गाँधी की हत्या तक करा देने का प्रयत्न किया। अछूतों द्वारा आन्दोलन को कवि युग धर्म मानता है, अतएव उसकी रक्षा हेतु वह बोधिसत्व का आह्वान करता है

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 6, June 2019

निष्कर्ष

उन्होंने सामाजिक और आर्थिक समानता और शोषण के खिलाफ कविताओं की रचना की। एक प्रगतिवादी और मानववादी कवि के रूप में उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं को ओजस्वी और प्रखर शब्दों का तानाबाना दिया। उनकी महान रचनाओं में रश्मिरथी और परशुराम की प्रतीक्षा शामिल है। उर्वशी को छोड़कर दिनकर की अधिकतर रचनाएँ वीर रस से ओतप्रोत है। भूषण के बाद उन्हें वीर रस का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

ज्ञानपीठ से सम्मानित उनकी रचना उर्वशी की कहानी मानवीय प्रेम, वासना और सम्बन्धों के इर्द-गिर्द घूमती है। उर्वशी स्वर्ग परित्यक्ता एक अप्सरा की कहानी है। वहीं, कुरुक्षेत्र, महाभारत के शान्ति-पर्व का कवितारूप है। यह दूसरे विश्वयुद्ध के बाद लिखी गयी रचना है। वहीं सामधेनी की रचना कवि के सामाजिक चिन्तन के अनुरुप हुई है। संस्कृति के चार अध्याय में दिनकरजी ने कहा कि सांस्कृतिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद भारत एक देश है। क्योंकि सारी विविधताओं के बाद भी, हमारी सोच एक जैसी है।

इन रचनाओं में क्रान्ति का उद्‌घोष है, हृदय की ज्वाला है, दास्ताँ की पीड़ा और उसके विरुद्ध विद्रोह की भावना है। पीड़ित मानवता और दलित समाज के प्रति दिनकर की सहानुभूति सहज ही फूट पड़ी है। मैथिलीशरण गुप्त के पश्चात् राष्ट्रीय भावधारा को अपने युग के अनुसार चित्रित करने में दिनकर ही प्रमुख हैं।

दिनकर की रचना में विश्व कल्याण की महती भावना की अभिव्यक्ति हुई है। ऐसी रचनाएँ विश्व कल्याण की पोषक हैं। कवि विश्व क्रान्ति द्वारा शान्ति चाहता है। विश्व की विषम परिस्थितियाँ उसको उसी प्रकार उद्वेलित करती हैं जिस प्रकार देश की विषम परिस्थितियाँ उसे चैन नहीं लेने देतीं।

दिनकर की राष्ट्रीय चेतना वर्तमान की पुकार से सजग होती हैं और क्रान्ति का नारा लगाती है। उसे शक्ति के प्रति अगाध आस्था है-

बल के सम्मुख विनत मेड़-सा, अम्बर शीश झुकाता है।
इससे बढ़ सौन्दर्य दूसरा, तुम को कौन सुहाता है?
है सौन्दर्य शक्ति का अनुचर, सुन्दरता निस्सार वस्तु है
हो न साथ में शक्ति अगर!

दिनकर की राष्ट्रीय चेतना पर सत्य और अहिंसा के प्रभाव के दो स्रोत हैं- (i) प्रतीक की परम्परा का प्रभाव (ii) गाँधी का प्रभाव। वह एक ओर अहिंसावाद नीति का विरोध करते हैं तो दूसरी और शक्ति और क्रान्ति के महत्त्व का वर्णन करते हैं। 'परशुराम की प्रतीक्षा' में अहिंसा की नीति का विरोध करते हुए प्रतिशोध शक्ति की प्रशंसा करते हुए कहते हैं-

गीता में जो त्रिपिटिक निकाल पढ़ते हैं,
तलवार गलाकर जो तकली गड़ते हैं।
शीतल करते हैं अनल प्रबुद्ध प्रजा का,
शेरों को सिखलाते हैं कार्य अजा का।
जब तक प्रसन्न वह अनल सुगुण हँसते हैं,

दिनकर ने अपने काव्य में राष्ट्रीय भावना के सम्बन्ध में स्वयं लिखा है- "संस्कारों से मैं कला के सामाजिक पक्ष का प्रेमी अवश्य बन गया था, किन्तु मेरा मन भी चाहता था कि गर्जना तर्जन से दूर रहूं और केवल ऐसी ही कविताएँ लिखूं जिनमें कोमलता और कल्पना का उभार हो...... और सुयश तो मझे 'हुंकार' से ही मिला, किन्तु आत्मा अब भी 'रसवन्ती' में बसती है। राष्ट्रीयता मेरे व्यक्तित्व के भीतर से नहीं आती। उसने बाहर से आकर मुझे आक्रान्त किया है। दिनकर के काव्य में प्रणय और राष्ट्रीयता की दो समान धाराएँ प्रवाहित हुई हैं।" अतः स्पष्ट है कि दिनकर जी ओज और पौरुष के कवि हैं। उनकी रचनाओं में कर्मवाद की चेतना के दर्शन होते हैं।[5]

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 6, June 2019

संदर्भ

1. दिनकर एक शताब्दी, डॉ स्वयंवती शर्मा, डॉ, दिनेश कुमार.
2. राष्ट्रकवि दिनकर एवं उनकी काव्य कला, शिखर चन्द्र जैन
3. दिनकर का वीरकाव्य, धर्मपाल सिंह आर्य
4. दिनकर व्यक्तित्व और रचना के नये आयाम, डॉ गोपाल राय सत्यकाम
5. दिनकर की काव्यभाषा, डॉ यतीन्द्र तिवारी